रामा–रामा रटते रटते ....

(तर्ज – नगरी नगरी द्वारे द्वारे)

रामा–रामा रटते–रटते बीती रे उमरिया ।
रघुकुलनन्दन कब आओगे, दासी की झोंपड़िया ।।
जात की मैं भीलनी हूँ प्रभुजी, भजन–भाव नहीं जानूँ रे ।
राम, तेरे दर्शन के कारण, वन में जीवन पालूँ रे ।
चरण–कमल से निर्मल कर दो, दासी की झोंपड़िया ।।
रामा–रामा.....

रोज सवेरे वन में जाकर, फल चुन–चुन कर लाती हूँ ।
अपने प्रभु के सम्मुख रखकर, प्रेम से भोग लगाती हूँ ।
मीठे–मीठे बेरों की मैं भर लाई छबड़िया ।।
रामा–रामा.....

श्याम–सलोनी मूरत तेरी, नयनों बीच बसाऊँगी ।
बहुत दिनों की आस लगी है, दिल से नहीं भुलाऊँगी ।
अब क्यों प्रभूजी भूल गए हो, लो दासी की खबरिया ।।
रामा–रामा.....

नाथ तेरे दर्शन की प्यासी, अबला एक मैं नारी हूँ ।
दरस बिना दो नयना तरसे, सुनलो बहुत दुखियारी हूँ ।
प्रभुजी ! मुझको दर्शन दे दो, डालो एक नजरिया ।।
रामा–रामा.....

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजे डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।